डॉ. अर्पिता अग्रवाल

दक्षिण की गंगा 'कावेरी नदी'

कुर्ग की पहाड़ियों से लेकर समुद्र तक कावेरी की लम्बाई 772 किलोमीटर है। इस लम्बी यात्रा में कावेरी का रूप सैकड़ों बार बदलता है। कहीं वह पतली धार की तरह दो चट्टानों के बीच बहती है तो कहीं उसकी चौड़ाई डेढ़ किलोमीटर के करीब होती है और वह सागर की तरह दिखाई देती है। कहीं कावेरी 300 फुट की ऊँचाई से जलप्रपात के रूप में गिरती है तो कहीं पर उसे बांस की लकड़ी का पुल बनाकर लोग पार कर जाते हैं। कई नदियों को अपने में समाते हुए कावेरी समुद्र में मिलने से पहले 'डेल्टा' बनाती है और बंगाल की खाड़ी में विलीन हो जाती है।

कावेरी दक्षिण भारत की मुख्य नदी है जो पूर्व की ओर बहकर बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। दक्षिण भारत में दो लम्बी पर्वतमालाएं हैं। एक पश्चिम में और दूसरी पूर्व में हैं। पश्चिम की पर्वतमाला 'पश्चिमी घाट' और पूर्व की पर्वतमाला 'पूर्वी घाट' कहलाती है। वर्ष 2012 में 'पश्चिमी घाट' को यूनस्को के 'विश्व विरासत स्थल' में शामिल कर लिया गया था। पश्चिमी घाट के उत्तरी भाग में कर्नाटक के कुर्ग जनपद में एक पहाड़ का नाम सहय पर्वत (सहाद्रि) है। इस पर्वत की एक ऊँची पहाड़ी को ब्रह्मकपाल या ब्रह्मगिरी कहते हैं। इस पहाड़ी के भीतर से फूटी सरिता का जल एक सरोवर में गिरता है और एक छोटे से झरने के रूप में सरोवर से निकलकर 'कावेरी' को जन्म देता है। सरोवर के किनारे ही देवी मन्दिर में कावेरी की उपासना देवी रूप में होती है। यह सरोवर 'तलैकावेरी' कहलाता है। कावेरी का यह स्रोत कभी नहीं सूखता। कोवरी को यहां के स्थानीय लोग बेटी के रूप में मानते हैं इसलिए प्रतिवर्ष त्रिदिवसीय 'कावेरी विदाई पर्व' धूमधाम से मनाते हैं। इस अवसर पर एक भव्य मेला लगता है। महिलाएं कावेरी के विदा की रस्म वैसे ही निभाती हैं जैसे विवाह के बाद बेटी की विदाई की रस्म होती है। कावेरी के उद्गम 'तलैकावेरी' में स्नान करने के बाद प्रत्येक स्त्री उपहार के रूप में कोई न कोई गहना सरोवर में डालती है। यहां की पहाड़ी चट्टानों के बीच से रास्ता बनाती, टेढ़ी-मेढ़ी मस्त चाल से चलती कावेरी तेजी से मैसूर की ओर बढ़ती है। आरम्भ में नदी का बहाव बहुत घुमावदार होता है। मार्ग में 'भागमंडलम' नामक स्थान पर सहयपर्वत से निकली कनका नदी इसमें मिलती है और सहयपर्वत से निकले सैकड़ों छोटे-छोटे सोते भी कावेरी में मिल जाते हैं। नदियों के इस संगम स्थल का महात्म्य इलाहबाद के प्रयागराज की भांति प्रसिद्ध है। यहीं पर भगवान शिव का प्राचीन 'भाग भागण्डेश्वर' मंदिर है। ऊँची-नीची चट्टानों के बीच से यात्रा करती हंसती-खेलती, किलोल करती कावेरी कनका नदी के साथ कुर्ग और मैसूर की सीमा पर काफी दूर तक बहते हुए उत्तर की ओर मुड़ती ही है कि सहयपर्वत से निकली हेमावती नदी बड़े वेग से उत्तर की ओर से आ कर कावरी में मिल जाती है और कावरी दिशा बदल कर दक्षिण पूर्व की ओर बहने लगती है। यह संगम स्थल तिप्पूर नामक स्थान पर है। हेमावती नदी के कावेरी से मिलने के स्थान के पास ही दक्षिण से लक्ष्मणतीर्थ नाम की नदी भी कावेरी से मिल जाती है।

कुर्ग की पहाड़ियों से लेकर समुद्र तक कावेरी की लम्बाई 772 किलोमीटर है। इस लम्बी यात्रा में कावेरी का रूप सैकड़ों बार बदलता है। कहीं वह पतली धार की तरह दो

चट्टानों के बीच बहती है तो कहीं उसकी चौड़ाई डेढ़ किलोमीटर के करीब होती है और वह सागर की तरह दिखाई देती है। कहीं कावेरी 300 फुट की ऊँचाई से जलप्रपात के रूप में गिरती है तो कहीं पर उसे बांस की लकड़ी का पुल बनाकर लोग पार कर जाते हैं। कई नदियों को अपने में समाते हुए कावेरी समुद्र में मिलने से पहले 'डेल्टा' बनाती है और बंगाल की खाड़ी में विलीन हो जाती है।

कावेरी को तमिल भाषा में प्यार से 'पोन्नी' कहते हैं। पोन्नी का अर्थ है-'सोना उगाने वाली'। कहा जाता है कि कावेरी के जल में सोने की धूल मिली हुई है। कावेरी से मिलने वाली कनका और हेमावती उपनिदियों के नाम भी सोने का संकेत देते हैं। कावेरी पर प्राचीन काल से लेकर अब तक सैकड़ों स्थानों पर बांध बने हैं। कावेरी की नहरों से करोड़ों हेक्टेयर भूमि की सिंचाई होती है। गेहूं और धान की भरपूर खेती कावेरी के जल से ही होती है इसलिए भी कावेरी को 'पोन्नी' नाम मिला है। कावेरी तट पर बड़े-बड़े नगर, तीर्थस्थान व प्राचीन मन्दिर हैं। सैकड़ों कल कारखाने भी कावेरी तट पर स्थापित किए गए हैं। तमिल भाषा में कावेरी को 'काविरी' भी कहते हैं। काविरी का अर्थ है, ''उपवनों का विस्तार करने वाली'' कावेरी का जल भूमि को उपजाऊ बना देता है इसलिए उसे ''काविरी'' कहते हैं। कावेरी के जल से बांध बनाकर बिजली बनायी जाती है जो शहरों और उद्योग धन्धों को पहुंचायी जाती है।

कावेरी पर पहला बांध मैसूर शहर से उत्तर-पश्चिम दिशा में 19 किलोमीटर पर 'कृष्णराजसागरम' बना है। सन् 1816 में मैसूर नरेश (तत्कालीन) और सुप्रसिद्ध इंजीनियर विश्वेश्वरैया के प्रयत्नों के फलस्वरूप इस पहले आधुनिक विशाल बांध और जलाशय का निर्माण हुआ था। पहले इस बांध को 'कण्णम्बाड़ी का बांध' नाम से जाना जाता था। इस बांध के कारण बने विशाल जलाशय में ही हेमावती और लक्ष्मणतीर्थ मिलती हैं। इस जलाशय के पास 'वृन्दावन' नाम का एक विशाल उपवन है। इस अनुपम उपवन की छटा अत्यंत मनमोहक है। सुंदर फूल-पत्तियों से भरे इस बाग में प्रकाश की उत्तम व्यवस्था है, जिससे यहां झरनों का रंग और फव्वारों की फुहार के रंग भी प्रत्येक मिनट पर बदलते रहते हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो देवराज इन्द्र का नन्दनवन हो। मैसूर शहर दशहरा मेला, वृन्दावन उपवन और कृष्णराज सागर बांध के लिए विश्वविख्यात है। कृष्ण राजसागरम जलाशय का फैलाव कई योजन में है इसलिए यह समुद्र दर्शन का आनन्द देता है और इसके चौंसठ जल द्वार कर्नाटक की नहरों को जलापूर्ति करते हैं। बांध की दीवार के सहारे स्थित सोपान मार्ग से वृन्दावन उपवन पहुंचा जा सकता है। दीवार के साथ ही कावेरी देवी की चतुर्भुजी मूर्ति स्थित है जिनके ऊपर के दोनों हाथों में माला, कमल और नीचे के दोनों हाथों में जल ढरकाते हुए दो कलश सुशोभित हैं।

कावेरी नदी पर बना 'कृष्णाराजसागरम' बांध।

मैसूर से नीचे उतर कर पूर्व की ओर बहती हुई कावेरी द्वीपों की रचना करती है। प्रथम द्वीप है श्रीरंगपट्टनम या आदिरंगम। यह हिंदुओं का पावन तीर्थ स्थान है। यहां सुंदर घाट और प्राचीन देवालय है। यहां के मन्दिर में अनन्तशायी शेषशय्या पर सोते हुए विष्णु भगवान की मूर्ति है। इसी द्वीप पर अंग्रेजों के साथ युद्ध करते हुए टीपू सुल्तान ने वीरगति पायी थी। यहीं पास में स्थित 'रंगणाभिट्टू पक्षियों का अभ्यारण्य है। कावेरी पहाड़ियों को काट कर अपना मार्ग बनाती हुई आगे चलकर दूसरा द्वीप बनाती है। विभिन्न नदियों का जल अपने में समाते हुए, विशाल जलधारा के रूप में आगे बढ़ती कावेरी का दूसरा द्वीप शिव समुद्रम या मध्यरंगम के नाम से विख्यात है। यहां भी भगवान विष्णु की शेष नाग पर शयन करते हुए मूर्ति है। यहां भगवान शिव के मंदिर भी पूरी भव्यता के साथ स्थित हैं। यहां पहाड़ की बनावट के कारण कावेरी का जल एक विशाल झील की तरह दिखाई देता है। झील से आगे थोड़ी दूरी पर कावेरी लगभग 280 फुट की ऊँचाई से जल प्रपात के रूप में गिरती है। यह 'शिवसमुद्रम' प्रपात कहलाता है जो प्राचीन काल में कावेरी प्रपात के नाम से जाना जाता था। यह कर्नाटक पर्यटन का मुख्य आकर्षण है। यहां पास में ही विशाल बिजलीघर बना है। शिवसमुद्रम से आगे कावेरी सिम्सा और अकरावती नदियों सहित छोटी-छोटी नदियों को अपने में समाते हुए कर्नाटक और तमिलनाडु की सीमा बनाती है। तमिलनाडु में कावेरी की प्रवाह दिशा पूर्व की ओर रहती है। यहां होगेनेकल नाम का विख्यात जल प्रपात है। यहां पर कावेरी इतने प्रचंड वेग से चट्टानों पर गिरती है कि उससे छितराने वाले छींटे धुएं की तरह आकाश में फैल जाते हैं। इसी कारण तमिल भाषा में इस जलप्रपात को होगेनेकल यानी 'धुएं का प्रपात' कहते हैं। यहां बने स्वाभाविक जलाशय के विषय में एक कहानी प्रचलित है। कहते हैं प्राचीन काल में चोल देश के एक राजा ने यहां जल समाधि लेकर आत्म बलिदान दिया था। राजा का मनोरथ था कि कावेरी का जल प्रपात कुंड की चट्टानों में समाने की बजाय उसके राज्य की ओर बहे। राजा के बलिदान के प्रभाव से ही कावेरी प्रपात कुण्ड से बाहर निकल दक्षिण दिशा को मुड़कर उस राजा के राज्य की ओर बहने लगी। इसीलिए यह गहरा जलाशय या यज्ञकुंडम यानी 'यज्ञ की वेदी' कहलाता है। तमिलनाडु में प्रवेश करते समय कावेरी का प्रवाह दो पहाड़ों सीता पर्वत और पालमलै पर्वत के बीच बहता है। इनके बीच एक प्रसिद्ध विशाल बांध 'मेट्टूर बांध' है।

इस बांध से सिंचाई के लिए जल तथा उद्योग-धंधों के लिए जल-विद्युत प्राप्त होती है। मेट्टूर बांध से आगे कावेरी समतल मैदान में बहने लगती है। तमिलनाडू में कावेरी पर कितने ही छोटे-बड़े, नये-पुराने बांध बने हैं परन्तु उनमें मेट्टूर का बांध सबसे बड़ा है।

समतल मैदान में बहते हुए श्रीरंगम के पास कावेरी तीसरी बार द्वीप बनाती है। यह द्वीप सर्वाधिक पवित्र एवं विशाल है। यहां भी शेषशायी श्रीरंगनाथ भगवान विष्णु सदैव सब पर कृपा करते हैं। श्री रंगम तमिलनाडु के तिरूचिरापल्ली नगर के पास स्थित है। तिरूचिरापल्ली के तुरन्त बाद कावेरी दो शाखाओं में विभाजित हो जाती है। एक शाखा उत्तरपूर्व दिशा में बहती हुई बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। दक्षिण वाली धारा कावेरी नाम से पुकारी जाती है,

जो आगे चलकर पुनः अनेक शाखाओं में बंटती है जिसमें मुख्य वेन्नार है। कावेरी के डेल्टा भाग के आरम्भ में ऐतिहासिक नगर तंजावरम या तंजौर है। श्रीरंगम में कावेरी नदी और उसकी शाखा कैलेरून नदी साथ-साथ बहती है। इन दोनों को उल्लारू नाम की नहर मिलाती है, परन्तु यहां कावेरी की सतह कैलेरून से ऊँची होने के कारण कावेरी का सारा जल कैलेरून में बह जाता था और बेकार हो जाता था। आज से करीब 1600 साल पहले चोल राज्य के किसी राजा ने उल्लारू के बीच एक विशाल बांध बनावाकर कावेरी के जल को उसकी शाखा में बहने से रोका था। 'कल्लणै' कहलाने वाला यह प्राचीन बांध केवल पत्थरों और मिट्टी से बना

'मेट्टूर बांध का एक दृश्य।

है परन्तु न जाने इस मिट्टी में क्या चीज मिलाई गई थी कि आज तक करीब 1100 फुट लंबा यह बांध ज्यों का त्यों खड़ा है।

कावेरी क्षेत्र के चोल राज्य के प्रतापी राजा करिकालन ने कावेरी की बाढ़ से मचने वाली तबाही को रोकने के लिए और अपने खेतों की सिंचाई के लिए श्रीरंगम से पुहार तक बहुत लंबा बांध बनवाया जिसके द्वारा मीलों लम्बे नदी के दोनों किनारों को ऊँचा किया गया। करिकालन ने कई नहरें खुदवाई और छोटे-बड़े बांध बनवाये। यह सब आज से लगभग 2000 वर्ष पहले किया गया था। इससे पता चलता है कि बांध बनाने में हमारे पुरखे निपुण थे। पुहार नामक नगरी, जो उन दिनों कावेरी के समुद्र-संगम के स्थान पर बसी थी, चोल राज्य की राजधानी थी। यह बहुत बड़ा बन्दरगाह था। दूर-दूर के देशों से जहाज आया जाया करते थे। समुद्र के उमड़ आने से यह प्राचीन नगर डूब गया। आज तो वहां पर 'काविरिपूम्पट्टिनम्' नामक एक छोटा सा गांव है। राजा करिकालन की उपलब्धियों से प्रेरित हो तमिल कवियों ने उनकी प्रशंसा अपने गीतों में की है, उन्हें विष्णु का अवतार माना गया था।

कावेरी प्रदेश के अन्य प्रतापी राजा राजाराजन ने तंजौर में शिव भगवान का अद्भुत शिल्पकला का अतिसुन्दर मन्दिर बनवाया था। यह मंदिर 'वृहदेश्वर' नाम से प्रसिद्ध है। इसे 1987 में विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया था। राजाराजन की एक उपाधि है 'पोन्निविनशेलवन' जिसका अर्थ है 'सुनेहरी कावेरी का लाडला बेटा'। कावेरी के तट पर अनकों प्राचीन मंदिर हैं। तिरूचिरापल्ली नगर के अंदर एक ऊंचे टीले पर बना हुआ मातृभूतेश्वर का मंदिर और उसके चारों ओर का किला विख्यात है। श्रीरंगम के पास बना 'जुम्बकेश्वर शिवलिंग' का प्रसिद्ध मंदिर है। कावेरी के तट पर पावन तीर्थ चिदंबरम् है जिसके शिवालय की नटराज की प्रतिमा जगत प्रसिद्ध है। कावेरी के डेल्टा पर स्थित "एरावातेश्वरा मंदिर" दारासुरम को सन् 2004 में विश्वविरासत स्थल घोषित किया गया और कोवरी की एक शाखा के पास स्थित 'गंगा ईकोनडाचोलापुरम मंदिर' को भी सन् 2004 में विश्व विरासत स्थल का दर्जा प्राप्त हुआ। तमिलनाडु में कुम्भकोणम नामक तीर्थ क्षेत्र में प्रत्येक बारहवें वर्ष 'महामखम' (महामाघम) नाम से होने वाला कुम्भ मेला लगता है।

कावेरी के पवित्र जल ने कितने ही संतों कवियों, राजाओं, दानियों प्रतापीयवीरों को जन्म दिया। इसी कारण इसे 'तमिल भाषियों की माता' कहा जाता है। तिरूवैयरू नामक नगर कावेरी की यात्रा का अंतिम प्रसिद्ध नगर है। यह नगर सन्त, संगीतज्ञ एवं कवि त्यागराज की जन्मस्थली है। यहां स्थित त्यागराज मन्दिर की भव्यता विश्वविदित है। वैष्णव आचार्य "श्री रामानुज", शैवधर्म का देश-भर में प्रचार करने वाले संत कवि ज्ञानसंबंधर कावेरी-तट पर ही हुए थे। महाकवि कंबन ने तमिल भाषा में अपनी विख्यात रामायण की रचना इसी कावेरी के तट पर की थी।

दक्षिण संगीत को नये प्राण देने वाले संत त्यागराज, श्यामा शास्त्री और मुत्तथुरय दीक्षित सभी कावेरी तट के निवासी थे। तंजौर में पेशवाओं ने 'सरस्वती महल' के नाम से एक विशाल पुस्तकालय बनवाया था। समस्त कावेरी क्षेत्र में चोल, पल्लव, पाण्डेय, होयसल, मराठों तथा विजय नगर-नरेशों का समय-समय पर शासन हुआ और कावेरी क्षेत्र वास्तुकला, शिल्पकला के उन्नत नमूनों से सुशोभित होता गया।

अंत में कावेरी एक छोटी और शिथिल जलधारा के रूप में समुद्र में बंगाल की खाड़ी में विलीन हो जाती है। उत्तर भारत में जैसे गंगा का महत्व है वैसे ही कावेरी का महत्व दक्षिण भारत में है इसलिए इसे 'दक्षिण की गंगा' भी कहते हैं। गंगा और कावेरी ने अन्न, जल देकर भारत भूमि को सिंचित किया और महापुरूषों को जन्म देकर भारत वर्ष को गौरवान्वित किया।

आज भारत की अन्य नदियों की ही तरह कावेरी भी प्रदूषित हो चुकी है। कभी पीने के पानी का मुख्य स्रोत होने वाली कावेरी के जल की गुणवत्ता गिर गयी है अब वह पीने योग्य नहीं रहा। शहर का सीवेज बिना उपचारित किए नदी में बहाया जा रहा है। खेतों से, कॉफी बागानों से बहकर आए फसलों के रोगनाशकों और कीटनाशकों के हानिकारक अवशेषों, औद्योगिक इकाइयों का रसायन युक्त कचरा, प्लास्टिक की वस्तुएं जैसे पन्नियां, कप इत्यादि, नदी किनारे फेंका गया कूड़ा-करकट, इस सबसे नदी का जल व भूजल दोनों प्रदूषित हो रहे हैं। भूजल प्रदूषित होने से पीने के पानी का संकट और गहरा गया है। पीने के पानी के मुख्य दो ही स्रोत होते हैं, नदी का जल और भूजल। नदियों का जल तो पीने योग्य रहा नहीं, भूजल भी यदि प्रदूषित हो गया तो भविष्य में कहीं पेट्रोल पंपों की ही तरह जल-पंपों से पानी का वितरण न होने लग जाए।

जल के लिए विभिन्न राज्यों व देशों में विवाद होते रहते हैं क्योंकि नदियों के पानी को कोई सरहद नहीं रोक सकती अतः नदी जहां-जहां से गुजरती है वहां-वहां के लोग नदी के सारे पानी पर अपना ही अधिकार समझते हैं। वर्षा के कम होने से नदी में पानी की कमी हो जाने पर राज्यों में झगड़े होने लगते हैं। ऐसा ही एक विवाद कर्नाटक और तमिलनाडु में वर्षों से चल रहा है। यह विवाद उग्र हिंसक प्रदर्शनों का रूप भी ले लेता है। कावेरी जल विवाद ट्रिब्यूनल ने सन् 2007 के फैसले में कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल एवं पुडुचेरी में पानी के यथानुपात बंटवारे की बात कही थी लेकिन राज्यों के बीच विवाद नहीं रूका। अब सुप्रीम कोर्ट ने कर्नाटक को तमिलनाडु के लिए निश्चित सीमा तक निश्चित मात्रा में पानी देने का आदेश दिया है। हमें जल को व्यर्थ बहाने से बचना होगा। पानी की कमी वाले क्षेत्रों में ऐसी फसलों को लगाना होगा जो पानी कम लेती हों क्योंकि पानी की कमी होने पर किसानों की फसलें सूख कर नष्ट हो जाती हैं। साथ ही एक राज्य को दूसरे राज्य की पानी की जरूरत को सहानुभूति पूर्ण नजरिये से देखना होगा।

संपर्क करेः
डॉ. अर्पिता अग्रवाल
काकली भवन, 120-बी/2, साकेत
मेरठ - 250 003 (उत्तर प्रदेश)
मो. 9410029500
ईमेलः fca.arpita.meerut@gmail.com